चित्रण कला में नारी रूपांकन

डॉ० अर्चना जोषी

व्याख्याता, चित्रकला विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, राजस्थान

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० अर्चना जोषी
चित्रण कला में नारी रूपांकन,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.106-109
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

नारी का 'सौन्दर्य प्रतिमान' के रूप में स्थापित होना सर्वविदित है। विश्व की कोई शैली या विधा नारी रूपाकारों के अंकन से अछूती नहीं रही, चाहे मूर्त रूपाकार हो या अमूर्त। भारत व यूरोप दोनों ही स्थानों के अधिकांश कलाकारों का प्रेरणा स्त्रोत एवं अभिव्यक्ति योग्य विषय 'नारीदेह' रहा है। प्रत्येक काल एंव वाद में नारी रूपाकारों को प्रबलता से अभिव्यक्ति मिली है परन्तु भारतीय कला में इसका रूप भाव प्रवण व श्रद्धा स्वरूप रहा जबकि यूरोपीय चित्रों में इसे भौतिक, तकनीक व वैचारिक परिवर्तन के साथ अधिक देखा जा सकता है। भारतीय कला में नारी सौन्दर्य की प्रतिच्छाया है और भारतीय दर्शन में नारी व प्रकृति समष्टी के संचरण में परस्पर गुथे हुए है। यहाँ नारी को प्रकृति का रूप माना गया है जिसके अस्तित्व के बिना सृष्टी का न तो अस्तित्व सम्भव है और न ही उसका संचरण। वस्तुतः नारी ही दृश्य कलाओं की मुख्य विषय वस्तु रही है।

व्यापक रूप में नारी सिर्फ एक दैवीय सौन्दर्य या कलाकार की कल्पना न होकर एक सृजनकर्ता है। सन्तानोत्पत्ती उसका विशेष अधिकार है और मातृत्व उसका सहज गुण। नारी के इस विशेष गुण को आदिकाल से कलाकारों ने अपनी कृतियों में संजोकर उसके मातृत्व को सदा के लिए अमरता प्रदान की कर दी। भारतीय दर्शन की एक अन्य अवधारणा के अनुसार सृष्ठी के निर्माता पालक व संहारक ब्रह्मा, विष्णु और शिव अपनी शक्तियों (सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती) के बिना अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकते। सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती क्रमशः विद्या, सौभाग्य, सम्पन्नता तथा पवित्रता की देवी है और भारतीय कला में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

सिन्धुवासियों नें कांस्य प्रतिमा में नारी सौन्दर्य के छरहरेपन को निरूपित किया तो शुंग व सातवाहन कालीन अंजता के चित्रकारों ने नारी आकृतियों को उन्नत उरोज व मांसल नितंबो, कमर में पतले बल व नाभी पक्ष के समीप तनिक मांसलता दे उसे और अधिक सौन्दर्यमयी बना डाला है। यहाँ उल्लेखनीय है कि अंजता का नारी सौन्दर्य उसके मातृत्व पक्ष को अधिक उजागर करता है। यहँ के गुफा चित्रों, जिनका निर्माण द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व ईसा की सातवीं सदी तक, अर्थात् 900 वर्षों तक होता रहा, में नारी सौन्दर्य एंव उसकी विविध भाव भंगिमाओं का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देखा जा सकता है। विद्वानों के अनुसार अजन्ता के ये चित्र विश्व के किसी भी काल के चित्रों की तुलना में अद्वितीय है क्योंकि यहां भावप्रधान सौन्दर्य को सम्मानित रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यहाँ नारी के विविध रूप– माँ देवी, रानी, दासी आदि अंकन हुआ है। न केवल अजन्ता अपितु अन्य बौद्ध केन्द्रों जैसे मथुरा, सांची, भरहत में भी नारी के विविध स्वरूपों का अंकन उतनी ही विविधता, चारूता व पवित्रता के साथ हुआ।

देवी व मातृशक्ति के रूप में नारी के अत्यधिक चित्रण के पश्चात् भारतीय कला में यक्षिणी एक ऐसा पात्र है जो उतना ही महत्वपूर्ण है और बहुतायत से प्रयुक्त हुआ है। गुप्तकालीन दीदारगंज की यक्षिणी–इस संदर्भ में सबसे सुन्दर उदाहरण है।

खजुराहो (10–12 वीं शती) के मंदिरों में नारी सौन्दर्य के विविधरूपों को अभिव्यक्ति मिली है। यहाँ नारी चित्रण में उसके विभिन्न भाव, शक्ति व सौन्दर्य की सजगता का बाहुल्य प्रदर्शित हैं। वहीं जैन शैली में नारी चित्रण अनोखे सौन्दर्य की प्रस्तुति देता है जिसे नाटकीयता व प्राथमिक रंगों के प्रयोग से अदभुत बनाया गया है। तत्पश्चात् मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी लघुचित्र शैलियॉ तत्कालीन राज्यधिकारियों की इच्छा की अनुवर्तिनी बन कर चली। मुगल कालीन चित्रकारी पूर्णतः दरबारी चित्रकारी रही परन्तु इसमें भी नारी की सुन्दर देहयष्टि व रंगों का सूफियानापन प्रभावी रहा है।

भरत के नाट्यशास्त्रानुसार नारी का तीन प्रमुख पात्रों देवी, नायिका और गणिका के रूप में चित्रित किया जाना उल्लेखित है। राजस्थान व पहाड़ी शैली के चित्रों में नारी आकृति के कपड़ों में झीनापन, विशेष वस्त्र विन्याय व मनभावन सुरंगें रंगों से उसे एक अनोखा सौन्दर्य प्रदान किया गया है। यहाँ नारी के नयनो व देहयष्टि की मुद्रा सम्पूर्ण रसों का प्रदर्शन करने में पर्याप्त लगती है। 16वीं व 17वी सदी के कलाकारों ने नायिका–स्वरूप को बहुतायत से चित्रित किया है। प्रसिद्ध काव्यों यथा गीत गोविन्द, बिहारी सत्सई आदि की विषय वस्तु लेकर कृष्ण–राधा को नायक नायिका के रूप में चित्रित किया है। बारहमासा व रागमाला चित्र श्रृंखलाओं ने नारी के विभिन्न मनोभावों को लावण्यमयी रूप में प्रस्तुत किया है।

समय के परिवर्तन नें नारी के चित्रण में अभिव्यक्ति के स्वरुप को बदल दिया। अमृता शेरगिल, रविन्द्रनाथ टैगोर आदि की चित्राभिव्यक्ति के फलस्वरूप भारतीय चित्रशैली आधुनिकता की ओर

प्रस्थान करती है परन्तु यहां भी नारी स्वरूपों की अभिव्यक्ति कलाकार से विलग न हो सकी। रविन्द्रनाथ टैगोर की सरलीकृत नारी आकृतियां इसका उदाहरण है। अमृता शेरगिल की '**हिल वूमेन', 'बाजार जाते हुए**', '**वधु का श्रृंगार**','**मदर इंडिया**', '**स्त्रि**', **एवं 'सूरज मुखी**' आदि की रचनाकर नारी के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित किया। राजा रवि वर्मा ने **लेडी विथ मिरर, माद्री, गेलेक्सी, ऐ ग्रुप ऑफ इंडियन वूमेन**, तथा भारतीय धार्मिक ग्रंथों रामायण, महाभारत, संस्कृत व प्राचीन ग्रंथों की नायिकाओं को चित्रित कर आर्दश आज्ञाकारी पुत्री व गहनों से लदी हुई गृहणी आदि स्त्री आकृतियां सृजित की। समसामयिक आंदोलनों से प्रभावित नन्दलाल बोस व बिनोद बिहारी मुखर्जी, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, अन्य चित्रकारों ने भी नारी आकृति चित्रण हेतु अपनी तुलिकाएँ चलाई।

के.के. हेब्बर, एम.एफ. हुसैन, एन. एस. बेन्द्रे, सरोजपाल गोगी, अंजली ईला मेंनन, जतिनदास, एफ. एन. सूजा, वैकुन्ठम आदि ने नारी चित्रण द्वारा नारी की समसामयिक स्थिति का परिदृश्य प्रस्तुत किया। एम.एफ. हुसैन ने विभिन्न देवियों व अभिनेत्रियों के शबीह चित्र नारी के सशक्ती व सुदृढ़ रूप को परिलक्षित करते हैं। इस संदर्भ में पाश्चात्य जगत की कृतियों पर दृष्टिपात करें तो पुनर्जागरण काल व उसके पश्चात् रची गई कला में नारी रुपों की बहुतायतता देखी जा सकती है जो हर तरह के माध्यम व धरातल पर अभिव्यक्त हुई है जिनके विषय दीर्घकालिक इतिहास, पौराणिक कंथाए, वास्तविक, नैतिक व भौतिक जीवन सभी कुछ रहे। इस संदर्भ में यदि प्राचीन श्रेष्ठ चित्रकारों का उल्लेख करें तो बर्नर्ट वनऍर्ली, पीअर फ्रांसिस्को मोला, पाओलोडिमाटिस और अब्राहम ब्लोमार्ट, अलडीग्रीवर, विरजिअल सोलीस, जेन साडिलर, हैडरिक गोल्टजियम, की कृतियां प्रमुख रूप से इंगित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त उत्तर क्षेत्रीय महारथी एल्बर्ट ड्यूरर 1471–1528, की कृति औरत और बच्चा लेन्डस्केप में भूमि पर लेटे दिखाए गये है कि कृतियां इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय रही है। इसके पश्चात् प्रभाववादी चित्रकार मोने की कृति **ओलम्पियां** जो रेनेसा काल से 19वीं सदी के मध्य नारी रूपांकन के संदर्भ में एक क्रांतिकारी कृति मानी गई है। यह तेलचित्र यथार्थवादी निर्वस्त्र चित्रण था जो अब तक पाश्चात्य यूरोप में निषिद्ध था। इस चित्र में मुख्य पात्र नारी को निर्वस्त्र आधे लेटे हुए और पास में एक दासी को खड़े हुए बनाया गया था । परन्तु चित्र में छाया प्रकाश की व्यवस्था इस प्रकार की गई है कि मुख्य पात्र सम्पूर्ण प्रकाश में है तथा दासी का मुख अंधकार में।

इस संदर्भ में द्वितीय कृति प्रतीकात्मकवादी **द थ्री ब्राइड्स** 19वीं सदी से 20वीं शती पूर्व कला आंदोलन को दर्शाता है यह कृति जेन टूरूप नामक डच कलाकार की है जो काले चाक व पेंसिल से निर्मित है इस चित्र में चित्रित सभी नारी आकृतियों के शेष शरीर को यथार्थवादी चित्रण से दूर रखा गया है परियों के बाल व शरीर घुमावदार बनाए गये है।

इसके पश्चात् घनवाद के प्रतिनिधि चित्रकार **पिकासो** की कृति **'गर्ल विफोर ए मिरर'** नारी अंकन के प्रस्तुतीकरण की ओर अगले पायदान पर ले जाती है जो न यथार्थवादी है न प्रतीकात्मक नारी अंकन। यह संयोजन निजस्व के साथ प्रस्तुतीकरण है। पिकासो की इस कृति के पश्चात् **डेकूनिंग** की कृतियों में नारीचित्रण इतना अमूर्तवादी हो जाता है कि विषय को कठिनाई से पहचाना जा सकता है।

इस प्रकार पाश्चात्य यूरोप में रेनेसा से आज तक की समय सीमा में नारी रूपांकन के प्रस्तुतीकरण में जबरदस्त परिवर्तन देखे गये है यह पाश्चात्य कला में एक कला आन्दोलन से दूसरे कला आंदोलन द्वारा कला में महिला रूपांकन का आधिक्य के साथ प्रस्तुतीकरण को दर्शाता है।

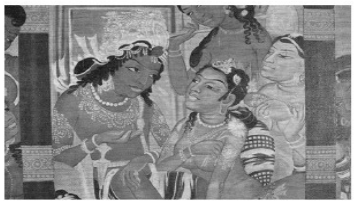
अजंता गुफाओं में चित्रित नारी आकृतियां

अमृता शेरगिल की कृति

राजा रवि वर्मा की कृति

एम एफ हुसैन की कृति

पिकासो की कृति

अल्बर्ट ड्यूरर की कृति

संदर्भः

1. नन्दलाल बसु, भारतीय कला का सिंहावलोकन, दिल्ली 1955
2. निहार रंजन राय, मूर्तिकला, चित्रकला तथा अन्य कलाए, दिल्ली 1984
3. भगवत शरण अग्रवाल, भारतीय कला का इतिहास, नई दिल्ली 1981
4. र.वि.साखलकर आधुनिक चित्रकला का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2013
5. Archer W.G- 'India and Modern Art' London 1959
6. Arnason H.H. 'History of Modern Art' London 1969
7. Apollinaire G. 'The Cubist Painters' N.Y- 1949
8. Barr A.H.'Masters of Modern Art, N.Y- 1954
9. Canaday J. 'Mainstreams of Modern Art' London 1959
10 Thomas and Hudson, 'women art and society', London, 1990.